International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2025; 7(1): 01-03
Received: 02-10-2024
Accepted: 08-11-2024

सुनीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. महानंद द्विवेदी
प्राध्यापक समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुनीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन

सुनीत कुमार द्विवेदी एवं महानंद द्विवेदी

DOI: https://doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i1a.555

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन किया गया है। मादक पदार्थो का उपयोग प्राचीन काल से ही विविध रूपों में हो रहा है। मादक पदार्थों की उपयोगिता समस्याओं के निराकरण में लम्बे समय से प्रयास चल रहा है लेकिन आजकल इसका प्रयोग बहुत ही तेजी से बढ़ता ही जा रहा है। नशे के कारण व्यक्ति का निजी जीवन व सामाजिक परिवेश दूषित हो गया है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का निर्माण किया गया है। इसमें रीवा जिले की 250 युवा उत्तरदाता से उद्देश्यपरक प्रतिदर्श के आधार पर चयन कर तथ्यों के संकलन हेतु संबंधित उद्देश्यों के आधार पर अनुसूची का निर्माण किया गया। शहरी क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदषा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 25.96 तथा मानक विचलन 8.04 है। ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 22.52 तथा मानक विचलन 8.26 है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थक अन्तर है।

कुटशब्दः रीवा जिला, मादक पदार्थ, व्यसन, युवा वर्ग, मनोदशा, सामाजिक विघटन।

प्रस्तावना
पूरे विश्व में मादक पदार्थों के सेवन से सबसे ज्यादा युवा वर्ग जूझ रहा है, हमारा देश भी इसके सेवन अछूता नहीं है। यह पूरे विश्व की गम्भीर समस्या है जिसका प्रभाव भारत जैसे आदर्श देश पर भी अत्यधिक मात्रा में पड़ा है। आज की युवा पीढ़ी मादक पदार्थों के सेवन से अपने लक्ष्य को भूल रही है और वह अपने जीवन को बर्बाद करके अपने माता–पिता को भी दुःख दे रही है। मादक पदार्थों के सेवन से किशोर माता–पिता की आशाओं के विपरीत निकलने से स्वयं को उपहास का पात्र तो बनाते ही है लेकिन परिवार को भी तनाव ग्रसित करते है। युवा वर्ग में मादक पदार्थों के सेवन के प्रति रूझान के अनेकों कारण हैं, जिन्हें दूर करने के लिए समाज के सभी समुदाय का कर्तव्य है कि इस बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए युवा वर्ग के इन मादक पदार्थों के प्रति रूझान को खत्म करके समाज में एक अच्छा नागरिक बनाने में सम्पूर्ण मदद करने की कोशिश करें। नशीले पदार्थों के सेवन स्वास्थ्य पर अनेक प्रकार के दुष्प्रभाव होते है नशीली दवाओं का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव मस्तिक पर पड़ता है, जिसके परिणाम स्वरूप दवाओं के आदि व्यक्ति के जीवन का हर पहलू प्रभावित होता है। ड्रग्स का सेवन करने से मानव मस्तिष्क में संचार के लिए कार्य करने वाले प्राकृतिक रासायनिक तत्वों की कॉपी तैयार होती है जो मस्तिक की प्रतिक्रिया परिपथ को अधिक उत्तेजित कर देती है। नशीली दवाओं का उपयोग स्वयं उपयोगकर्ता के व्यवहार में कई बार घृणास्पद रूप से प्रकट होता है। मादक पदार्थों के सेवन के कारण किशोरों को स्मृति हानि, एकाग्रता में कमी, पढ़ाई में कठिनाई, तनाव आदि परेशानियों से युवा वर्ग को गुजरना पड़ता है।
नशा करने वाले व्यक्ति बिना खाना खाये रह सकता है पर बिना नशा किये नहीं रह सकता जिससे उसकी आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जाती है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण
सिंह एम0एन0 (1999)[1] ने अपनी पुस्तक ''ड्रग एवं आधुनिक समाज'' में ड्रग्स सेवन करने वाले युवकों सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक परिवेश, ड्रग्स सेवन की प्रवृत्ति, कारण एवं प्रभाव को जानने का प्रयास किया है। अध्ययन का क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के बाराबंकी, वाराणसी और गाजीपुर जनपद के ग्रामीण इलाके रहे है। अध्ययन से उन्हें पता चलता है कि अधिकांश ड्रग्स सेवनकर्ता 21–25 वर्ष की आयु के थे तथा शिक्षित और जागरुक होते हुए भी ड्रग्स का सेवन कर रहे है। मुस्लिम युवकों की अपेक्षा हिन्दू युवक ड्रग्स का सेवन अधिक करते है। ज्यादातर ड्रग्स सेवन करने वाले युवकों के पारिवारिक सम्बन्ध सन्तोषजनक नहीं है। उनके परिवार में कलहपूर्ण माहौल पाया गया।

च्वहाण बी0एस0, प्रीती अरूण एवं अन्य (2007)[2] ने अपने अध्ययन में चंडीगुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों की ड्रग एव शराब पर निर्भरता के विषय में बताया है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश व्यक्ति 15–24 वर्ष की आयु के थे जिनमे 54.4 प्रतिशत पुरुष तथा 45.6 प्रतिशत महिलाएं थी। स्लम कॉलोनी में 93.08 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में 91.5 प्रतिशत व्यक्ति मुख्य रुप से शराब का सेवन करते थे। झुग्गी बस्तियों में रहने वाले अधिकांश व्यक्ति निकोटीन और कैनबीस का सेवन करते हुए पाये गए।

अब्राहिम एच0ए0एस0 महमूद एवं अन्य (2016)[3] ने नयी पीढ़ी की मुख्य समस्या के रुप में ड्रग्स सेवन को पाया तथा युवाओं द्वारा ड्रग्स सेवन करने के कारण एवं परिणाम को जानने की कोशिश की है। अपने अध्ययन के निष्कर्ष रुप में उन्होंने कहा है कि 18–25 वर्ष की आयु समूह के युवा सबसे अधिक मात्रा में मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। 70 प्रतिशत युवा मादक पदार्थों का सेवन इसलिए करते हैं क्योंकि उनका मित्र समूह इन पदार्थों का सेवन करता हैं। आधुनिक संचार प्रणाली जैसे मोबाइल फोन, चलचित्रों, फिल्मों आदि ने युवाओं को नशीली दवाओं का सेवन करने के लिए प्रभावित किया हैं। इसके अलावा बेरोजगारी और अशिक्षा को भी नशे की लत के लिए मुख्य कारण माना है।

शिवानी एवं बहुगुणा, उमा (2019)[4] ने युवा पीढ़ी और मादक द्रव्य व्यसनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया है। मादक द्रव्य व्यसन एक जीर्ण मानसिक रोग है। मादक द्रव्य व्यसन वह पदार्थ है जिसके सेवन से नशे का अनुभव होता है तथा लगातार सेवन करने से व्यक्ति उसका आदि बन जाता है। हमारे समाज में कई प्रकार के मादक द्रव्यों का प्रचलन है जैसे शराब, विहस्की, रम, बीयर, महुआ, हंड़िया आदि सामाजिक मान्यता प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे अवैध पदार्थ भी काफी प्रचलित हैं जैसे भांग, गांजा, चरस, हेरोईन, ब्राउन सुगर तथा कोकीन आदि। डाक्टरों द्वारा नींद के लिए या चिन्ता या तनाव के लिए लिखी दवाईयों का उपयोग भी मादक द्रव्यों के रूप में होता है। तम्बाकूयुक्त पदार्थ जैसे सिगरेट, खैनी, जर्दा, गुटखा, बीड़ी आदि भी इनके अन्तर्गत आते हैं। मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या भारत में ही नहीं अपितु विश्व के विकसित तथा विकासशील देशों में भी एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। जिससें यह व्यसन देश के युवाओं में एक महामारी के रूप में फैलती जा रही है। इन नशीले पदार्थों के सेवन से विश्व में अपराध एवं हिंसा की प्रवृति दिन प्रतिदिन विकसित होती जा रही है। प्रत्येक वर्ष 26 जून को ड्रग एब्यूज एवं इलिसिट ट्रैफिकिगं के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है जिससे सम्पूर्ण विश्व को मुख्य रूप से युवाओं को ड्रग्स से खतरे के लिए जागरूक किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

ड्रग्स सेवन की समस्या आज सम्पूर्ण विश्व में महामारी की भांति फैली हुई है। यह मुख्य रुप से युवा वर्ग जो कि देश का भविष्य है, को निगलती जा रही है। भारत का विश्व में तंबाकू के उपभोग और बिक्री में तीसरा बड़ा स्थान है। जो एक सोचनीय स्थिति है। युवा ही किसी देश का भविष्य होते हैं और यही राह भटक जाए तो उस देश के भविष्य की कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं। ड्रग्स का कोई एक आधार नहीं है वेसे तो हम इसको दवाइयों के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं लेकिन जब इसका सेवन सीधे तौर पर किया जाए तो वह सेहत के लिए बहुत ही हानिकारक साबित होता है, क्योंकि इनके सेवन के कारण व्यक्ति को न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक, सामाजिक और व्यवहार से संबंधी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो सामाजिक क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध समस्या का सीमांकन

भौगोलिक परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत सभी विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

विषयवस्तु का परिसीमन – अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया है।

सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली पत्रक का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन

रीवा जिला में युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित 250 युवा वर्ग का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अध्ययन हेतु किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

रीवा जिला 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का

ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शहरी एवं ग्रामीण युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन का अध्ययन

समूह		शहरी क्षेत्र के युवा	ग्रामीण क्षेत्र के युवा
समूह की संख्या (N)		125	125
मध्यमान (M)		25.96	22.52
मानक विचलन (SD)		8.04	8.26
क्रान्तिक निष्पत्ति (t)		3.32	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
$df = (125-1) + (125-1) = 124 + 124 = 248$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी में न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन से सम्बन्धित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। तालिका में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदषा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 25.96 तथा मानक विचलन 8.04 है। ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 22.52 तथा मानक विचलन 8.26 है। 248 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.59 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.32 है, जो कि दोनों विश्वास स्तर के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थक अन्तर है। इसलिए परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में द्रव्य व्यसन की समस्या भयावह है और युवा वर्ग इससे ज्यादा ग्रसित है जिसका परिणाम यह हुआ हैं कि व्यक्ति का निजी जीवन तनाव ग्रस्त हुआ है और युवा समाज की दिशा विघटित हुई है। शोध क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर प्रचलित विविध नियमों और कानूनों को सशक्त रूप लागू करने की आवश्यकता है। सामाजिक जागरुकता और उचित उपचार से ही नशा की लत से मुक्त किया जा सकता है।

संदर्भ

1. सिंह, एम.एन. (1999), 'ड्रग्स तथा आधुनिक समाज', विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं.–20।
2. चव्हाण, बी.एस. (2007), इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्री, वॉल्यूम–49(1), पृष्ठ सं. 44–48।
3. अब्राहिम, एच.एएस. (2016), जर्नल ऑफ फार्मेसी एण्ड बायोलॉजिकल साइंसेस, वॉल्यूम–11(1), पृष्ठ सं. 16।
4. शिवानी एवं बहुगुणा, उमा (2019), युवा पीढ़ी और मादक द्रव्य व्यसनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, 6(8)2:102-105.